nbt.india
एकः सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

अक्तूबर 2014 वर्ष 19, अंक 10

वर्तमान युग में तकनीकी साक्षरता की आवश्यकता

वैश्विक प्रतीक तेजी-से बदल रहे हैं। शहरी जीवन से अपरिचित व्यक्ति के लिए कार के हॉर्न की आवाज का कोई मतलब नहीं। एंबुलेंस के सायरन का मतलब भी वह नहीं समझता। ट्रैफिक कांस्टेबल के संकेतों का उसके लिए कोई अर्थ नहीं। मेट्रो का दरवाजा खुलने और बंद होने की सूचना देने वाली आवाजें उसके लिए कोई अर्थ नहीं रखतीं। दूर से आती रेलगाड़ी के वेग का उसे अनुमान नहीं होता। शहरी जीवन ने समय के साथ जो बॉडी लैंग्वेज तैयार की है, उससे उसका परिचय नहीं है। वह पढ़ना जानता भी हो तो शायद इलेक्ट्रॉनिक टेक्स्ट पढ़ना नहीं जानता।

कंप्यूटर और मोबाइल ने आपको सारी दुनिया से जोड़ दिया है। रेलवे रिजर्वेशन, सिनेमा का टिकट, इनकम टैक्स, संपत्ति का रजिस्ट्रेशन, नेट-बैंकिंग हर चीज अब आपके करीब आ रही है। देश के किसी भी इलाके में चले जाइए, गाँव हो या शहर, गली-नुक्कड़ या चौराहे पर आपको मोबाइल फोन और रिचार्ज की दूकान जरूर मिलेगी। फोन करना, रिसीव करना, टेक्स्ट मैसेज भेजना अब आम बात है। यह पिछले 10 साल से भी कम की उपलब्धि है।

इस वर्ष लाल किले से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'डिजिटल इंडिया' की बात की थी। प्रधानमंत्री के डिजिटल इंडिया में हर गाँव ब्रॉडबैंड से जोड़ा जाएगा। ब्रॉडबैंड यानी तेज गति का इंटरनेट कनेक्शन। इस तेज इंटरनेट से स्कूल-कॉलेजों में पढ़ाई, टेलीमेडिसिन यानी डॉक्टरी मदद, खबरें, बैंक खाते, सरकारी सेवाएँ आदि सब जुड़ेंगी। विभिन्न फॉर्म भरना और सरकारी काम इंटरनेट के माध्यम से करना भी इसमें शामिल है। यह 'डिजिटल इंडिया' आपके मोबाइल फोन में होगा, और आपकी भाषा में होगा, लेकिन इसका फायदा उठाने के लिए आपको टेक्नोलॉजी साक्षर होना होगा।

गूगल के कार्यकारी अध्यक्ष श्री एरिक श्मिट पिछले साल मार्च में भारत आए थे। उनका कहना था कि 2020 तक भारत में इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों की संख्या 60 करोड़ से ऊपर होगी। इनमें से 30 करोड़ लोग हिंदी तथा दूसरी भाषाओं में नेट सर्फ करेंगे। भारतीय भाषाओं के लिए गूगल खास तौर से अनुसंधान कर रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में तकरीबन साढ़े चार करोड़ लोग भारतीय भाषाओं में नेट की सैर करते हैं। शहरों में तकरीबन 25 फीसदी और गाँवों में लगभग 64 फीसदी लोग भारतीय भाषाओं में नेट पर जाते हैं।

सामाजिक परिभाषाएँ बदल रही हैं। सजग और सफल समाज का नया नाम है सूचना समाज या इंफॉरमेशन सोसायटी; यानी वह समाज जिसकी तकनीक तक पहुँच है। जिसके पास तकनीक है वह अपनी सुविधाएँ बढ़ा सकता है। असमानता का नया नाम है—'डिजिटल डिवाइड'। व्यक्तियों और समुदायों के इस भेद को अब नए किस्म की साक्षरता के सहारे लड़ा जा सकता है, यह साक्षरता 'डिजिटल' है।

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर

राष्ट्रपति ने दिया राजस्थान को 'श्रेष्ठ राज्य' का सम्मान

राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम के दौरान, साक्षरता को बढ़ावा देने एवं साक्षरता कार्यक्रम को बेहतर बनाने के प्रयासों के लिए राजस्थान को 'श्रेष्ठ राज्य' के सम्मान से सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी ने की। राजस्थान के राज्यपाल श्री कल्याण सिंह इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद थे।

राज्य के साक्षरता एवं सतत शिक्षा निदेशालय की निदेशक श्रीमती निवेदिता मेहरू एवं संयुक्त निदेशक श्री शीशराम चावला ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से यह सम्मान ग्रहण किया। पुरस्कार ग्रहण करने के बाद श्रीमती निवेदिता मेहरू ने बताया कि राजस्थान में साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए कई स्तरों पर प्रयास किये गए हैं। विभाग ने सेवानिवृत्त अध्यापकों, सैनिकों, बेरोजगार युवकों एवं साक्षर भारत कार्यक्रम के वॉलेंटियर्स के सहयोग से गरीब तबकों एवं निरक्षर लोगों तक साक्षरता की किरण पहुँचाई है जिससे राजस्थान देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हो गया है।

सीकर को मिला 'बेहतर प्रदर्शन जिला' का सम्मान

राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने नई दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर सीकर को 'श्रेष्ठ प्रदर्शन जिला' के सम्मान से सम्मानित किया। सीकर के जिला कलेक्टर श्री सलविन्दर सिंह सोहता ने यह पुरस्कार ग्रहण किया।

कार्यक्रम के पश्चात श्री सोहता ने बताया कि जिला प्रशासन ने विभिन्न विभागों को साक्षरता मिशन में सहयोगी बनाया तथा गैर-सरकारी संस्थाओं एवं विभिन्न क्लबों को साक्षरता कार्यक्रम में सहयोगी बनाकर स्थानीय संसाधनों का उपयोग किया। जिला प्रशासन ने साक्षरता का वातावरण बनाने के लिए जिले के दूर-दराज के क्षेत्रों में रात्रि चौपालों एवं पोथी वाचन कार्यक्रमों का भी निरंतर आयोजन किया, जिससे निरक्षर लोगों में साक्षरता के प्रति रुचि जागृत हुई।

प्रेरक संस्मरण

भारत में स्त्री मुक्ति आंदोलन की जनक : पंडिता रमाबाई

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पाँचवाँ अधिवेशन 1889 में मुंबई में आयोजित हुआ था। खचाखच भरे हॉल में देश-भर के नेता एकत्र हुए थे।

एक सुंदर युवती अधिवेशन को संबोधित करने के लिए उठी। उसकी आँखों में तेज और उसके कांतिमय चेहरे पर प्रतिभा झलक रही थी। इससे पहले काँग्रेस अधिवेशन में ऐसा दृश्य देखने में नहीं आया था।

हॉल में लाउडस्पीकर न थे। पीछे बैठे हुए लोग उस युवती की आवाज नहीं सुन पा रहे थे। वे आगे की ओर बढ़ने लगे। यह देखकर युवती ने कहा, "भाइयो, मुझे क्षमा कीजिए। मेरी आवाज आप तक नहीं पहुँच पा रही है। लेकिन इस पर मुझे आश्चर्य नहीं है। क्या आपने शताब्दियों तक कभी किसी महिला की आवाज सुनने की कोशिश की? क्या आपने उसे इतनी शक्ति प्रदान की कि वह अपनी आवाज को आप तक पहुँचने योग्य बना सके?"

प्रतिनिधियों के पास इन प्रश्नों के उत्तर न थे।

इस साहसी युवती को अभी और बहुत कुछ कहना था। उसका नाम पंडिता रमाबाई था। उस दिन तक स्त्रियों ने कांग्रेस के अधिवेशन में शायद ही कभी भाग लिया हो। पंडिता रमाबाई के प्रयास से 1889 के उस अधिवेशन में नौ महिला प्रतिनिधि सम्मिलित हुई थीं।

वे एक मूक प्रतिनिधि नहीं बन सकती थीं। विधवाओं का सिर मुड़वाए जाने की प्रथा के विरोध में रखे गए प्रस्ताव पर उन्होंने एक जोरदार भाषण दिया—"आप पुरुष लोग ब्रिटिश संसद में प्रतिनिधित्व की माँग कर रहे हैं जिससे कि आप भारतीय जनता की राय यहाँ पर अभिव्यक्त कर सकें। इस पंडाल में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए चीख-चिल्ला रहे हैं, तब आप अपने परिवारों में वैसी ही स्वतंत्रता महिलाओं को क्यों नहीं देते? आप किसी महिला को उसके विधवा होते ही पुरुष और दूसरों पर निर्भर होने के लिए क्यों विवश करते हैं? क्या कोई विधुर भी वैसा करता है? तब स्त्रियों को वैसी स्वतंत्रता क्यों नहीं मिलती?"

निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पंडिता रमाबाई ने भारत में नारी-मुक्ति आंदोलन की नींव डाली। वे बचपन से ही अन्याय सहन नहीं कर पाती थीं। एक दिन उन्होंने नौ वर्ष की एक छोटी-सी लड़की को उसके पति के शव के साथ भस्म किए जाने से बचाने की चेष्टा की। "यदि स्त्री के लिए भस्म होकर सती बनना अनिवार्य है तो क्या पुरुष भी पत्नी की मृत्यु के बाद सता होते हैं?" रौबपूर्वक पूछे गए इस प्रश्न का उस लड़की की माँ के पास कोई उत्तर न था। उसने केवल इतना कहा कि "यह पुरुषों की दुनिया है। कानून वे ही बनाते हैं, स्त्रियों को तो उनका पालन भर करना होता है।" रमाबाई ने पलटकर पूछा, "स्त्रियाँ ऐसे कानूनों को सहन क्यों करती हैं? मैं जब बड़ी हो जाऊँगी तो ऐसे कानूनों के विरुद्ध संघर्ष करूँगी।" सचमुच उन्होंने पुरुषों द्वारा महिलाओं के प्रत्येक प्रकार के शोषण के विरुद्ध संघर्ष किया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित 'नवसाक्षर साहित्यमाला' के अंतर्गत नवीनतम पुस्तक : एक परिचय

दोस्ती के रंग

अंजली

पृ. 16 ₹ 14.00

सातवीं कक्षा में पढ़ने वाले मोनू को स्कूल ले जाने–ले आने का काम बन्ने रिक्शेवाला का था। बन्ने 25 साल का लंबा-चौड़ा जवान था। बन्ने को मोनू का और मोनू को बन्ने का साथ अच्छा लगता था। रास्ते-भर दोनों बातें करते जाते। दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई। बच्चे वैसे भी अमीरी-गरीबी, रंग, वर्ण, धर्म, जाति नहीं देखते। जो उनसे प्यार से बोलें वही उनके दोस्त हो जाते हैं। बात-की-बात में बन्ने ने उसे बता दिया कि उसकी माँ उसे शादी कर लेने के लिए जोर दे रही है। लेकिन बन्ने अपनी पसंद की लड़की से शादी करना चाहता था। लड़की के माता-पिता इसके लिए राजी नहीं थे। वे चाहते थे कि लड़के का पक्का घर हो। लेकिन बन्ने गरीबी में भी खुश रहता, हँसता रहता।

कई साल बीत गए। मोनू बड़ा होकर अफसर बन गया, और वह एक बच्चे का पिता भी बन गया। स्कूल बस में अपने बच्चे को छोड़ने जाते हुए मोनू को याद आया–बन्ने कहाँ होगा? एक बार जब वह गाँव गया तो माँ से पता करके बन्ने के घर पहुँचा। देखा, एक आदमी बीमार पड़ा खटिये पर लेटा है। वह पहचान गया, यही बन्ने है। उसने बन्ने से बात की। हालचाल जानकर उसे शहर के अस्पताल ले गया। उसे दिल की बीमारी थी। इलाज करवाया। सारा खर्च उसी ने दिया। अब बन्ने ठीक हो गया। बन्ने की शादी उसी की पसंद की लड़की से हुई थी। मोनू ने बन्ने को अपने यहाँ एक नौकरी भी दे दी।

ISBN 978-81-237-7184-7

ऐसा क्यों?

(अंतिम भाग)

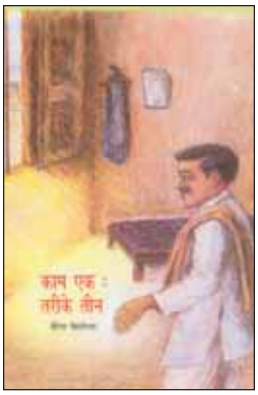

मैं कहती हूँ...

महिलाएँ सबसे पीछे मानी जाती हैं।
पुरुष सबसे आगे माना जा रहा है।
पुरुष के हक अधिक।
पुरुष की पढ़ाई अधिक।
पुरुष की मजदूरी के पैसे अधिक।
पुरुष की आजादी अधिक।
पुरुष को खाना अधिक।
पुरुष को आराम अधिक।
पुरुष को सुविधाएँ अधिक।

मुझे सचमुच कुछ भी समझ नहीं आता।
मैं भी इनसान हूँ।

तो फिर ऐसा क्यों?
क्या यह ठीक है?
क्या यह सब बदलना नहीं चाहिए?

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'ऐसा क्यों?' (बालकृष्ण बोकील) से एक अंश

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें

अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकें

सूची-पत्र मँगवाने के लिए
आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

ई-मेलः office.nbt@nic.in

वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित 'नवसाक्षर साहित्यमाला' के अंतर्गत कुछ पुस्तकें : एक परिचय

पानी

रामदरश मिश्र पृ. 16 ₹ 7.00

ऊँची जात का दंभ पाले गाँव के दबंग का दिल भी आखिर पिघल गया और उसका इनसान जाग उठा। पर कैसे? किस्सा कुछ इस तरह है कि ऊँची जात के रामदेव बाबू का पुत्र परमेसर बाबू निर्जन सड़क पर गिरा पड़ा है। उस पर नीची जात के मंगल और रामहरख (पिता व पुत्र) की नजर पड़ी। शहर में पढ़ने वाला और पिता के साथ रामदेव बाबू के दुर्व्यवहार से दुखी पुत्र रामहरख परमेसर बाबू को उसी अवस्था में वहाँ छोड़कर जाना चाहता है, पर पिता के दयालुपन के सामने वह झुक जाता है। प्यास से बेहाल परमेसर बाबू को अपने ही लोटे से पानी पिलाकर दोनों बाप-बेटे उसे कंधे पर लादकर उसके घर तक लाते हैं। जब रामदेव बाबू को पानी पिलाने का यह प्रसंग मालूम पड़ता है तो वे आगबबूला हो जाते हैं। इधर, बुखार से तपता बेटा जब अपने पिता का ऐसा व्यवहार देखता है तो वह मंगल को 'चाचा' कहकर बुलाता है और उन्हीं के साथ उनके घर चलने की बात कहता है। वह अपने पिता को इस दंभ के लिए उलाहने भी देता है। बेटे की बात सुनकर रामदेव बाबू में जातिगत श्रेष्ठता का गरूर मिटने लगता है। वे कातर और याचक नजरों से मंगल और अपने बेटे को देखने लगते हैं।

ISBN 978-81-237-1891-0

धरती निचला बैल

कुलवंत सिंह विर्क

अनु.: सुभाष नीरव पृ. 14 ₹ 7.00

एक फौजी का पिता अपने बेटे की मौत पर भी नहीं रोया। सीने पर बेटे की मौत का दर्द लेकर भी वह अपने घर आए बेटे के साथी फौजी की आवभगत कर रहा है। बेटे के साथी को बताया भी नहीं कि अब उसका साथी इस दुनिया में नहीं रहा। दरअसल, बर्मा की सीमा पर लड़ाई लड़ता मान सिंह अपने घर पंजाब आया तो साथी करम सिंह ने उससे उसके घर उसके माँ-बाप से मिल आने को कहा था। मान सिंह इसी कारण करम सिंह के घर आया था। घर का वातावरण उसे बोझिल लगा था और उसे आवभगत के बावजूद कुछ-कुछ बेरुखीपन का अहसास भी हो रहा था, पर सचाई उसे डाकिये के आने के बाद मालूम पड़ी जब वह करम सिंह की पेंशन का कागज देने वहाँ आया। करम सिंह का भाई जसवंत भी बात तो कर रहा था, पर जाहिर उसने भी नहीं होने दिया था। बात जब खुल गई तो करम सिंह के बापू के आँख पर जमा पानी का पहाड़ फूट पड़ा और उसकी आँखों से धार-धार आँसू बहने लगे। जब रुँधे गले से मान सिंह ने बापू से पूछा कि उसके आते ही यह क्यों नहीं बताया तो बापू ने कहा कि तुम्हारी छुट्टी मैं क्यों खराब करता। मान सिंह को लगा, करम सिंह का बापू वह बैल है जिसने अपने कंधों पर सारी पृथ्वी उठा रखी है।

ISBN 978-81-237-2731-8

अँधेरा घर

पुदवै चंद्रहरि

अनु.: विजयलक्ष्मी सुंदरराजन पृ. 24 ₹ 14.00

बिना शिक्षा का घर अँधेरा घर होता है यही संदेश है इस पुस्तक में। मंगै अपने पति और दो बच्चों के साथ रहती है। अज्ञान और अशिक्षा की वजह से घर बीमारी, गंदगी और कलह से भरा रहता है। कभी बच्चा बीमार, कभी पति–बात-व्यवहार भी सबों का उसी तरह अनपढ़-गँवार वाला। बच्चे ने खाना माँगा तो खाने की चीज पर मक्खी भी भिनभिनाती रहे तो भी उसे बच्चे को खिला दिया जाता। बच्चे का इस कारण पेट दुखता तो ओझा-गुनी की शरण ली जाती। मिठाई पर कुत्ता मुँह लगा दे और दूध को बिल्ली, इससे लापरवाह मंगै यही मिठाई और दूध बच्चों को दे देती। घर में मंगै का भाई आया, पर उसकी खातिरदारी तो दूर खाना तक नहीं दे पाई मंगै, और यह सब लापरवाही के चलते। घर में कोई चिट्ठी आकर रखी है और पति को आठ दिन बाद खबर लगती। परिणाम, अनेक प्रकार से घाटा। घर में सामान बिखरे पड़े हैं कोई चिंता नहीं। पाँव से घासलेट की बोतल टकराकर सारा घासलेट जमीन पर गिरता है। घर में चोर आया। अक्ल के मारे घरवालों की वजह से चोर सबके सामने सीना तानकर चोरी का सामान ले जाता है। शिक्षा बहुत जरूरी है यही संदेश है यहाँ।

ISBN 978-81-237-3895-6

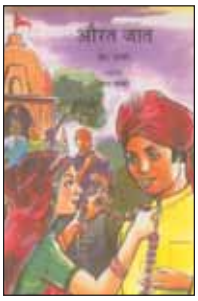

औरत जात

एस. साकी; अनु.: मोना साकी पृ. 20 ₹ 12.00

चंदन दास माँ-बाप की इकलौती संतान था। प्राइवेट नौकरी करता था। घर में केवल माँ थी। अब माँ उसकी शादी कर देना चाहती थी। शादी की बात सुनकर चंदन दास के मन में लड्डू फूटने लगे। वह हर वक्त होने वाली पत्नी की कल्पना में डूबा रहता। एक दिन अखबार में 'रिश्ते-ही-रिश्ते' का विज्ञापन देखकर वह विवाह कराने वाली एजेंसी के दफ्तर जा पहुँचा। दफ्तर में उसके झूठ-मूठ के फोटो खींचे गए। जल्द ही एक लड़की से उसका विवाह पक्का कर दिया गया। शादी मंदिर में साधारण ढंग से संपन्न हुई। लड़की देखने में लड़के से कहीं ज्यादा सुंदर थी। चंदन दास के दिन गुजरने लगे। लेकिन इसी बीच चंदन की माँ सिधार

गई। अब केवल वही दोनों रह गए। नई पत्नी की फरमाइशों को चंदन मना न कर पाता। उसके पैसे इसी तरह खर्च होते रहे। एक दिन पत्नी घर से सब मूल्यवान वस्तु लेकर चंपत हो गई। चंदन दुखी हुआ। संयोग की बात, एक दिन वह घर का काम-काज कर रहा था कि एक स्त्री झाड़ू-चौके का काम माँगने आ गई। चंदन को जरूरत भी थी, काम पर रख लिया। वह स्त्री सीधी, सरल और ईमानदार थी। घर का काम-काज करते-करते बीस बरस गुजर गए। चंदन को एक दिन बुखार हुआ और वह चल बसा। घर के सामान पर कब्जा करने पहले वाली स्त्री आई। सब कुछ ले गई। दूसरी देखती रह गई। दरअसल, वह प्यार की भूखी थी, दौलत की नहीं।

ISBN 978-81-237-2683-0

दुकान की चाबी

पोनकुन्नम वर्की

अनु.: एच. बालसुब्रह्मण्यम पृ. 28 ₹ 10.00

वरगीस और कोशी जिगरी दोस्त थे, पर दोनों के स्वभाव में अंतर था। वरगीस चालाक जबकि कोशी भोला-भाला था। दोनों ने मिलकर दूकान खोली। नून-तेल की यह दूकान जल्द ही राशन की दूकान बन गई। सरकारी चावल-गेहूँ आदि राशन यहाँ बँटने लगे। दूकान पर वरगीस ही बैठता, कोशी नहीं। पत्नी के जोर देने पर कुछ समय बैठा भी, पर फिर उसे लगा, यह उसके बस का नहीं। वरगीस कई प्रकार की चालबाजियाँ और पैसे की हेराफेरी करता, पर कोशी को कुछ पता न चलता। दोनों की पत्नियों में अकसर अनबन रहती। कोशी की ईमानदारी अपनी जगह रही, वरगीस की चालबाजियाँ अपनी जगह। हिसाब-किताब में हेराफेरी आदि अनेक बातें थीं। लोग इसे वरगीस की ही दूकान समझते। एक बार वरगीस बीमार पड़ा, कोशी उसे शहर ले गया। उसे कैंसर है, यह पता चला। वरगीस को अंतकाल समझ में आ गया। उसने कोशी से माफी माँगी और बच्चों का ध्यान रखने का आग्रह किया। वरगीस शीघ्र ही चल बसा। शोक से उबरने पर कोशी ने दूकान खोली। वरगीस की पत्नी को बुलाया। वह इस बात से अनजान थी कि कोशी के मन में क्या है। कुछ देर बाद कोशी के कंठ से आवाज फूटी। बोला, भाभी, आज से यह दूकान तुम्हारी हुई। ऐसा कहकर उसने उसे दूकान की चाबी दे दी।

ISBN 978-81-237-2338-9

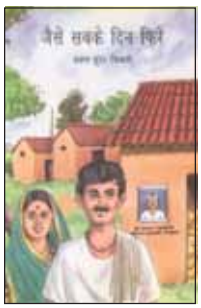

जैसे सबके दिन फिरे

श्याम सुंदर त्रिपाठी पृ. 24 ₹ 9.00

सहकारिता से गाँव में अन्नागार बनाने की कथा है यह। सरदा गाँव में सदाराम नाम का किसान सपत्नी रहता है। अबकी बुआई के लिए उसके पास बीज तक नहीं है। चिंतित है। संयोग से उसी वक्त उसके घर पुराने सुराजी मनराखन मंडल दो साथियों के साथ आए। चर्चा छिड़ी। शहर जाकर मिल-मालिक से बीज लाना तय हुआ। लेकिन इसमें शर्त लगी थी। एक दिन गाँव में इन लोगों की बैठकी चल रही थी। मनराखन भी इसमें शामिल हुए। समस्या के स्थायी समाधान की चर्चा छिड़ी हुई थी। विचार हुआ सामूहिक अन्न भंडार बनाने की। सब सरपंच के पास गए। सरपंच विचार से सहमत हुए। वे सहकारिता के बड़े पक्षधर थे। सूदखोरी और शोषण से बचाव का यही एकमात्र रास्ता था। सरपंच की सहमति से गाँव में इसी विषय पर एक बैठक रख ली गई। बैठक में सूदखोरों ने अपने गुर्गों से हंगामा करवाया, लेकिन मनराखन ने तय कर लिया था, अन्न भंडार बनाना है। सबसे थोड़ा-थोड़ा अनाज लेकर इकट्ठा करना था। शुरुआत विरोधी डेरहा के घर से हुई। डेरहा की पत्नी सही मिजाज की थी। उसने वांछित अनाज से कुछ ज्यादा ही दिया। सहयोग मिलता गया, अन्न भंडार भर गया। छेरछेरी पूरनमासी से शुरू यह अभियान सफल रहा था। अब वैसे तो मनराखन दुनिया में नहीं हैं, पर गाँव में अन्न भंडार है। वहाँ लिखा है—जैसे हमारे दिन फिरे, वैसे ही सबके दिन फिरें।

ISBN 978-81-237-3746-1

क्षमादान

प्रवासी विनयकृष्ण पृ. 12 ₹ 11.00

फजलू रमजान मियाँ का इकलौता बेटा है। माँ उसके बचपन में ही चल बसी थी। दुनिया से जाते वक्त उसने रमजान से कहा था—फजलू को नेक इन्सान बनाना। रमजान ने फजलू को बड़ी मेहनत से पाला-पोसा, बड़ा किया। फजलू कॉलेज में चला गया। एक दिन जब रमजान अपने घर के द्वारे पर बैठा था एक लड़का दौड़ता हुआ आया और गिड़गिड़ाता हुआ बोला कि वह उसे शरण दे दे। दरअसल, कुछ लोग उसकी जान लेने को उसके पीछे पड़े थे। रमजान मियाँ ने उस लड़के को अपनी झोपड़ी में ले जाकर बोरियों की ओट में छुपा दिया। थोड़ी देर बाद कुछ लोग वहाँ आ पहुँचे। उनके साथ एक लाश थी। रमजान लाश को देखते ही चीख पड़े। लाश उनके बेटे की थी। लोगों ने कहा कि हत्यारा इधर ही कहीं भागा है। हत्यारे का हुलिया जानने पर रमजान को समझते देर न लगी कि जिसे शरण दी है दरअसल वही उनके बेटे का हत्यारा है। रात के वक्त रमजान झोपड़ी में घुसा और उस लड़के से कहा कि जिसकी उसने हत्या की है दरअसल वह उन्हीं का बेटा है। छिपे हुए उस युवक की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। वह दया की भीख माँगने लगा। रमजान ने हत्यारे के माथे पर हाथ फेरा और उसे अभयदान दे दिया। रात के अँधेरे में वह उस युवक को गाँव की सीमा पर छोड़ आया।

ISBN 978-81-237-1667-1

काम एक : तरीके तीन

(भाग-2)

कुछ आगे बढ़ने पर मैंने देखा–
एक और मजदूर
बड़े मजे से पालथी मारे
पत्थरों की ढेरी पर बैठा था।

वह भी पत्थर कूट रहा था।
वह ध्यान लगाकर हाथ बचाकर
पूरे मन से पत्थरों पर हथौड़ा मारता।
पत्थर के मोटे होने पर
वह जोर बढ़ाता था।
पत्थर के छोटे होने पर
जोर घटाता था।

मैं चुपचाप खड़ा उसे देखता रहा।
वह अपने काम को पूरा करने में लगा हुआ था।
मेरे पास खड़े होने का उसे पता न था।

मैं समझ नहीं पाया
कैसे उसे बुलाऊँ और पूछूँ–
यहाँ क्या बनना है?
उसके पास जाकर मैं बोला–
सुनो भाई सुनो।
उसने मेरी ओर देखा।
पर हाथ का हथौड़ा चलता रहा।
ठक-ठक की आवाज आती रही।

वह बोला–क्या बात है, जल्दी बताओ।
मुझे बहुत काम करना है।
मेरे पास समय नहीं।
मैंने पूछा–यहाँ क्या बनना है?
कोई भवन या कोई मकान?

वह बोला–
मुझे इससे कोई मतलब नहीं

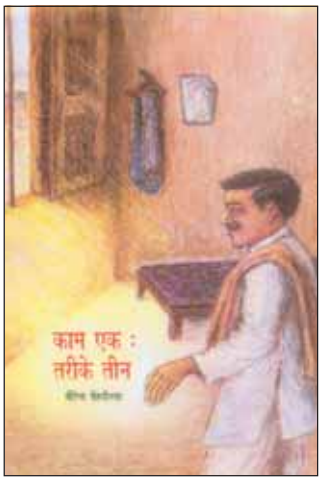

भवन बने या कोई मकान।
मुझे अपनी मजदूरी चाहिए।
इस कमाई से पाँच जनों का पेट पालना है।
इस ढेरी के सारे पत्थर
आज शाम तक मुझे तोड़ने हैं।
बजरी नपवाकर मुझे पैसे लेने हैं।
जितना ज्यादा काम करूँगा।
उतनी अधिक होती कमाई।
मुझको तो पैसों से मतलब
जो बनना है बना करे।
हमें क्या लेना-देना है?
उसका हथौड़ा अब भी चल रहा है।
ठक-ठक की आवाज आ रही है।

कुछ ही कदम आगे बढ़ाए थे,
पास ही से गाने की आवाज सुनाई दी।
मैं उस ओर बढ़ गया।
मैं उस गीत को सुनने लगा
वह गा रहा था–
नाम जपे जा, काम किए जा।
फिर काहू का डर है?
यह दुनिया है रैन बसेरा
न काहू का घर है।

आगे जाकर देखा,
एक और मजदूर पत्थर तोड़ रहा था।
वह चौकड़ी मारे यूँ बैठा था
जैसे कोई साधू जप कर रहा हो।
सड़क की ओर उसकी पीठ थी।
खाली जमीन की ओर उसका चेहरा था।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित
पुस्तक 'काम एक : तरीके तीन' (वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता) से एक अंश

खून–हमारी मालगाड़ी और सेना

यदि शरीर के किसी भी भाग में सूई चुभ जाए या त्वचा कट जाए तो खून बहने लगता है। यह इसलिए होता है, कि शरीर के सभी भागों में खून की नलियाँ होती हैं।

खून देखने में तो लाल पानी जैसा लगता है, लेकिन यह केवल पानी जैसा नहीं है। इसमें छोटे-छोटे करोड़ों कण होते हैं। इन्हें केवल खास यंत्र से ही देखा जा सकता है। कण दो रंग के होते हैं–लाल और सफेद। लाल कणों की मात्रा सफेद कणों की मात्रा से कहीं अधिक होती है। इसलिए खून का रंग लाल होता है। दो बूँद खून में भारत की आबादी जितने लाल कण होते हैं। लाल कणों में ऑक्सीजन ले जाई जाती है। खून में इनकी कमी होने पर हमारा रंग फीका पड़ने लगता है।

सफेद कण शरीर को बीमारियों से बचाते हैं। जब बीमारी के कीटाणु हमारे शरीर में घुसते हैं, तो सफेद कण उनसे लड़ते हैं। आमतौर पर इस लड़ाई में कीटाणु हार जाते हैं। इस तरह हमें बीमारी नहीं होती। यदि लड़ाई में सफेद कण मर जाएँ तो हमें बीमारी हो जाती है। इस तरह खून हमारे शरीर की सेना का काम करता है।

शरीर के सभी भागों में फैली नलियों में खून हमेशा बहता रहता है। नलियाँ दो तरह की होती हैं। एक में दिल से खून शरीर के सभी भागों में जाता है। दूसरी में शरीर के भागों से खून दिल की तरफ आता है। आप अपनी त्वचा पर नीले रंग की नलियाँ देख सकते हैं। इसमें खून दिल की तरफ ले जाया जाता है। शरीर में खून की नलियों

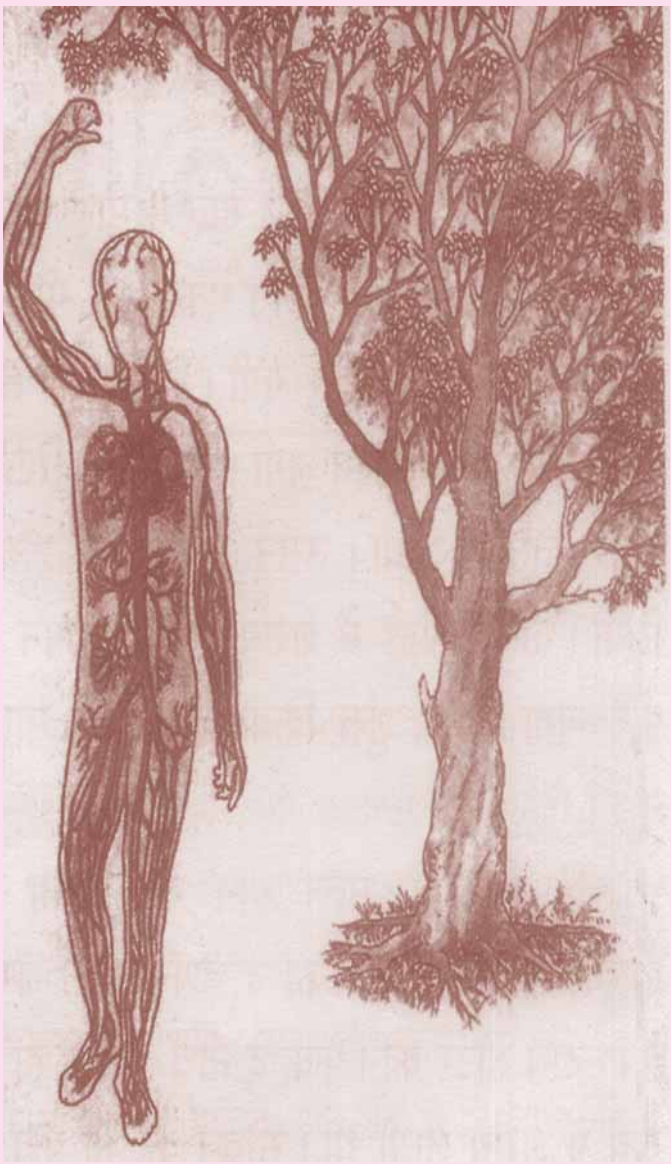

का जाल बिछा हुआ है। जिस तरह पेड़ की शाखाओं में से और शाखाएँ निकलती जाती हैं। उसी तरह खून की नलियाँ अपनी शाखाओं में बँट जाती हैं। यदि किसी अंग की खून की नलियों में रुकावट आ जाए तो वह अंग काम करना बंद कर सकता है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'मानव शरीर' (रमेश बिजलानी) से एक अंश

अंधविश्वासों से बचें

- गर्भवती महिला को पपीता नहीं देना चाहिए। इससे गर्भ गिरने का डर रहता है। यह गलत है। पपीते में विटामिन 'ए' होता है जो कि माँ और बच्चा दोनों के लिए आवश्यक है।
- छोटे बच्चे को भैंस का दूध नहीं देना चाहिए। ऐसा सोचना भी गलत है। भैंस के दूध में चिकनाई अधिक होती है। इसलिए दूध को उबालकर उसकी मलाई उतार लेनी चाहिए। फिर उस दूध को बच्चे को देना चाहिए। ज्यादा चिकनाई बच्चे को नुकसान कर सकती है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि भैंस का दूध देना ही नहीं चाहिए।
- छोटे बच्चों को केला न देना भी एक अंधविश्वास है। पका केला छोटे बच्चों के लिए बेहद उपयोगी है। इसमें ढेर ताकत व कैल्शियम होता है। जब बच्चा चार-पाँच महीने का हो जाए तभी उसे थोड़ा पका केला मसलकर देना चाहिए। धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ानी चाहिए।
- बीमारी में भोजन न करने से दो-तीन दिन में अपने आप ठीक हो जाएँगे, ऐसा सोचना गलत है। इससे परेशानी बढ़ती है। इससे शरीर में पौष्टिक तत्वों की कमी हो जाती है। कमजोरी हो जाती है। जितना समय बीमारी से ठीक होने में लगता है, कमजोरी से निबटने में उससे कहीं अधिक समय लग जाता है। बेहतर है कि बीमारी में भी रोगी अपनी पसंद का बिना घी, मसाले का, जल्दी पचने वाला खाना खाए, जैसे दाल, चावल का पानी, उबली सब्जियाँ, दूध, बिस्किट, रस, डबलरोटी, नरम फल, खिचड़ी आदि।

रेनू चौहान द्वारा लिखित तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया) से प्रकाशित पुस्तक 'भोजन और हमारा शरीर' से एक अंश

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/10/2014

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070